आरती यशोदा लाल की

आरती करत यशोदा प्रमुदित,
फूली अंग न मात ।

बल बल कहि दुलरावत,
आनन्द मगन भई पुलकात ।

सुबरन थार रत्न दीपावलि,
चित्रित घृत भीनी बात ।

कल सिंदूरन दूब दधि अच्छत,
तिलक करत बहु भांत ।

अन्न चतुर्बिध विविध भोग,
दुंदुभि बाजत बहु जात ।

नाचत गोप कुंकुमा छिरकत,
देत अखिल नगदात ।

बरसत कुसुम निकर सुर नर मुनि,
ब्रजजुवती मुसकात ।

कृष्णदास प्रभु गिरधर की,
श्री मुख निरख लजत ससि कांत ।

विवरण

यशोदा मइया परम आनन्दित मन से अपनी लाल की आरती करते हुए फूली नहीं समा रही है । बल-बल कहकर उन्हे दुलार रही है एवं आनन्द से मग्न होकर पुलक (खुश) रही है ।

आरती की थाल दीपों से सुसज्जित तथा उन दीपों में घी से भीनी हुई बाती लगी है, उस आरती की थाल में सिंदूर, दूब, दही एवं अच्छत भी रखा हुआ है, जिनसे मइया जसोदा बहुत ही अच्छे ढंग से उनको तिलक लगा रही हैं, नाना प्रकार के अन्न से बने भोजन की भोग लगा रही हैं, दुंदुभि की ध्वनि बज रही है, गोपी जन नाच रहे हैं एवं उनके ऊपर कुंकुम छिड़क रहे हैं, सभी देवता मुनि एवं ब्रज के लोग फूलों की वर्षा कर रहें हैं, एवं उनका मन हर्षित हो रहा है । कृष्ण दास कह रहे हैं कि ऐसे गिरधर की मुख देखकर चन्द्रमा भी लज्जित हो जाते हैं।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.